स्मरणिका

नवजागरण

सचिव
शिकदार आनवारुल इसलाम
श्री नीलमणि कलिता

महाकवि बनने के पिछे

✍ डॉ० परिमल कुमार दत्त
खारुपेटिया कालेज

संस्कृत साहित्य गगनं महाकवि कालिदास एक उज्ज्वलतम ज्योतिष्क है। स्वरस्वती का वर-पूत्र महाकवि कालिदास ने अपने जीवन के बारे में कुछ भी नहीं बताए। इसी लिए उनके जीवन के बारे में यथार्थ जानकारी उच्च कोटि के बिद्यानों के हाथ में थी नहीं है। कुछ कहाँनियाँ लोकसमाज में प्रचलित हैं, ये कहाँनियाँ कितने दूर तक सत्य है यह सिर्फ महाकवि ही कह सकती है। उनके सम्बन्ध में इतनी अधिक किंबदन्तियाँ प्रसिद्ध है कि उनसे बास्तविकता को खोज निकलना अधिक कठिन है। बहु प्रचलित कहानी के आधार पर मैं इस कहानी की अवतारना कर रहा हूँ।

कालिदास का जन्म हुआ था एक गरिव परिवार में। बचपन में अध्यायन का कोई अवसर उन्हे नहीं मिला। इसलिए कालिदास कभी भैर-बकड़ी चड़ाते थे। कभी लकड़ी काटते थे।

कालिदास जिस राज्य के निवासी थे उस राज्य के राजकुमारी एक विदूषी थी। वह केवल विदूषी ही नहीं बल्कि अति सुन्दरी भी थी। रूप में लक्ष्मी और गुण में स्वरस्वती जैसी राजकुमारी की शादी के लिए राजा ने समस्त राजाओ और पंडितो को आमत्रंन किया। आमंत्रन के साथ उन्होने राजकुमारी का एक शर्त भी भेजा।

शर्त के अनुसार जो पुरुष राजकुमारी के तीन प्रश्नों का सही उत्तर देने में कामयाब होगा उसीको राजकुमारी स्वामी रूप में स्वीकार करेगी।

समस्त भारत से बिद्वान एवं राजाए पधारे, किन्तु कोई भी राजकुमारी के तीन प्रश्नों का सही उत्तर देने में कामयाव नही हो पाया सब निराश होकर अपने-अपने राज्य लौट गये किन्तु उनमें से कुछ विद्वान ने मिलकर एक परिकल्पना रची। परिकल्पना के अनुसार उन्होंने निश्यय किया कि राजकुमारी का विवाह किसि नितान्त्र अनपड़ और मुर्ख ब्वक्ति से करा दिया जाए। वदला लेने का सुअवसर भी निकट आ गया।

एकदिन कालिदास एक पेड़ की डाली पर बैठकर उसी डाली की नींव को काट रहा था। ठीक उसी समय परिकल्पना करनेवाले विद्वानों का दल उसी रास्ते से गुजर रहे थे। पंडितो के कालिदासको देखकर यही सोचा कि इससे अधिक मुर्ख और कोई न होगा। बदला लेने का अच्छा अवसर भी मिल गयी। उन्होने कालिदास को पेड़ से उतारा और पूछा कि वह शादीसुदा है या नही। जब उनको मालुम पड़ा कि कालिदास अविवाहित है तो वे कालिदास को राजकुमारी से विवाह का प्रस्ताव दिया। कालिदास यह कहकर इनकार करने लगा कि वह मुर्ख है और गरीब भी है। वह किसी भी लड़की को सुख नहीं दे सकता रोजकुारी तो दूर की बात है। लेकिन अंत में वे सब कालिदास को मनाने में सफल हो गये और अपने साथ राजमहल ले गये। राजमहल जाने से पहले उन विद्वानों ने कालिदास को अच्छे और सिमती वस्त्र से सुसज्जित किया। वैसे भी कालिदास एक अपूर्ब दैहिक सौन्दये का अधिकारी था और किमती वस्त्र पहनने के बाद उसका सौन्दर्य और बड़ गया। पंडितों ने सुसज्जित कालिदास को राजकुमारी के समक्ष उपस्थित किया और उसका परिचय एक महाकवि और पंडित के रूप मे दिया। उसने सारे शास्त्र का अध्यायन किया है और किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में सक्षम है। लेकिन इस पंडित ने मौनव्रत धारण किया है और सारे प्रश्नों का उत्तर संकेतों के द्वारा ही देंगे। कालिदास का सौन्दर्य देखकर राजकुमारी मुग्ध हो गयी। उसने कालिदास को तीन प्रशन पुछी, वे प्रश्न थे -

क) द्वन्द्व किसके बीच होता है?

ख) किससे सब डरते है?

ग) कौनसी चीज सबसे मीठी है?

कालिदास ने संकेतो से तीन प्रश्नो का उत्तर दे दिया-

क) द्वन्द्व का अर्थ है कलह। कलह दो आदमियो के बीच होता है। कालिदास अपना दो उंगली दिखाते हुए इस प्रश्न का उत्तर दे दिया।

ख) भय से सब डरती है। कालिदास एक दृष्य को देखकर डर गया और उसी दृष्य को दिखाते हूए उसने दूसरे प्रश्न का भी उत्तर दे दिया।

ग) प्रेम सबको मीठी होती है। कालिदास ने एक चिड़िया को दिखाते हुए इस प्रश्न का भी उत्तर दे दिया।

कालिदास के रूप में पहले से ही घायल हूई राजकुमारी ने कालीदास के बुद्धिमत्ता से प्रसन्न होकर उसके गले में बरमाला दी और उसे अपनी पति के रूप में स्वीकार कर ली। उन पंडितो का परिकल्पना सफल हुआ और वे वहाँ से चले गये।

परन्तु शादी के रात ही राजुमारी को ज्ञात हुआ कि कालिदास एक अनपड़ और मूर्ख है। उसके साथ छल किया गया है। क्रोध में राजकुमारी उसी रात हीं कालिदास को महल से निकाल दी और कहने लगी कि अगर कभी कालिदास सचमुछ पंडित बना तो वह वापस आ सकता है।

कालिदास के हृदय पर प्रबल आघात हुआ। इस अपमान को सहन न पाकर कालिदास ने आत्महत्या करने को सोचा। जब एक गभीर सरावर पर कालिदास डूबने ही वाला था कि माता स्वरस्वती ने कालिदास को दर्शन दी। उन्होने बारानसी जाकर शास्त्र अध्ययन करने का उपदेश कालिदास को दिया। माता स्वरस्वती का आशीर्वाद पाकर कालिदास ने बारानसी में शास्त्रों का अध्ययन किया और एक महाकवि तथा पंडित भी बन गया।

अनेक वर्ष के पश्चात वे अपनी पत्नी तथा विदुषी राजकुमारी के पास जा पहुँचा और उसने दरवाजा खोलने की प्रार्थना की। राजकुमारी के द्वार खोलने के बाद कालिदास ने कहा।

"अस्ति कश्चित् बाग् विशेष"

अर्थात् कुछ विशेष बात हैं।

कालिदास ने 'अस्ति' पद से कुमार सम्भव महाकाव्य का शुरुआत किया-

"अस्तुतरस्यां हिशि हिमालयी नाम नगाधिराजः"।

"कृश्चित्" पद से मेधदूत काव्य रचना किया "कश्चित कात्मा विरहगुरुण"।

"बाग्" पद से रघुवशंम महाकाव्य का आरभ किया- बागर्थविव सम्पृक्तौं"।

कालिदास का अंधकार जीवन वृत्तान्त से एक झलक यहाँ मैं प्रस्तुत किया। □□

संस्कृति

✍ आनन्द बिहारी सिं

संस्कृति अर्थात् संस्कारित कार्य। इसका तात्पर्य होता है वे कार्य जिनसे समाज में शान्ति-प्रीति, और सामाजिक सामंजस्य स्थापित हो तथा समाज प्रगति करे। किन्तु संस्कृति के साथ घर्म एवं साहित्य का अन्योन्याश्रय है। इसलिए संस्कृति को समझने के लिए धर्म एवं साहित्य की चर्चा करना आवश्यक लगता है।

धर्म उन सामाजिक नियमो के संकलन को कहते हैं जिन नियमो को किसी विशेष भौगोलिक सीमा में रहनेवाले महापुरुषो के जीवन दर्शन तथा वहाँ के प्राकृतिक परिवेश के आधार पर बनाए गए हैं। चुकि स्वयं में जीवन दर्शन एवं भौगलिक परिवेश परिवर्तनशील हैं, इसलिए धर्म भी समय, स्थान और स्थिति के अनुसार परिवर्तनशील है। और इसमें संशोधन भी उतना ही वांछनीय है।

आज दुनिया के देश अपने-अपने संविधान के आधार संचालित होते हैं। किन्तु प्राचीन समय में काई संविधान नहीं होते हैं। किन्तु प्राचीन समय में कोई संविधान नहीं होता था और उस समय समाज तथा देश दोनो धर्म के आधार पर संचालित किए जाते थे। अर्थात्आज का संविधान प्राचीन काल के धर्म का संस्कारिक रुप है। इसलिए आज भी जो हामारा संविधान है उसका मूल सोत धर्म है। धर्म के आधार पर ही ब्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन का उद्देश्यो का निर्धारण किया जाता है। फिर उन उद्देश्य को पूरा करने के लिए ब्यक्ति या समाज जिन कार्यो को या तो करते हैं या करने की परिकल्पना करते हैं उन्हें एक साथ संस्कृति कहते हैं, जैसे- रहन-सहन, खान-पान, बिजनेस-ब्यापार, साहित्य-कला इत्यादि।

इन मानवीय कार्या को हम दो वर्गो में बाँट सकते हैं- संस्कृति एवं दुस्कृति।

जो मानवीय कार्य धर्म के अनुकूल तथा समाज के लिए हितकारी होते हैं उन्हे संस्कृति तथा जो न तो धर्म के अनुकूल हो और न समाज के लिए हितकारी उन्हें दुस्कृति कहते हैं, जेसे- चोरी-बेइमानी, शोषण-अत्याचार, धोखा-विश्वासघात इत्यादि।

चुकि संस्कृति समाज के लिए हितकारी है, इसलिए इसका संरक्षण एवं प्रसारण जरुरी है, जिससे समाज में उसका अच्छा प्रभाव पड़े तथा दुस्कृति का अन्त हो। इसलिए वह माध्यम जिसके द्वारा हम अपनी संस्कृति का संरक्षण एवं जन-जन सम्प्रसारण करते हैं उसे साहित्य कहसे हैं और यही कारण है कि साहित्य में संस्कृति का गुण-गान नहीं होता है। और यदि एसा होता है तो वह साहित्य हो नहीं सकता।

अतः हम कह सकते हैं कि धर्म एवं भौगलिक परिवेश किसी भी समाज में संस्कृति के स्रोत हैं तथा साहित्य उसके संप्रसारण एवं संरक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम।

किन्तु आज बिज्ञान एवं तकनीकी ने भौगलिक परिसीमा को लांघ गए हैं। दुनिया एक गॉव बन गई है। इसलिए हमारे जीवन दर्शन एवं प्राकृतिक नियम भी वदल रहे हैं। अब एक ही भौगलिक परिबेश में विभिन्न धर्मो के लोग निवास कर रहे हैं।

अतः अब आवश्यक्ता इस बात की है कि सभी धर्मो एवं विभिन्न प्रकार के जीवन-दर्शन के बीच समन्वय किया जाए तथा नया समन्वित सामाजिक नियम बनाएँ जाए, जिससे एक नयी समान्वित संस्कृति का जन्म एवं समाज में शान्ति-प्रीति, भाई-चारा और प्रगति का पथ प्रशस्त हो। □□

असम में हिन्दी की वर्तमान स्थिति

✍ इयासमिन साबिना नाजिम
शिक्षयित्री धूला राष्ट्रभाषा विद्यालय

माननीय लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलैजी की अध्यक्षता में सन 1938 ई. के उ नवंबर की आयोजित सभा में 'असम हिन्दी प्रचार समिति' नामक एक संस्था का जन्म हुआँ था। इसका ही परिवर्तित रुप है 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति'। श्रद्धेय बरदलैजी के उत्साह से प्रभावित होकर कई विद्वानो ने जैसे - डॉ. हरिकृष्ण दास, नीलमणि फुकन, लक्षीधर बरा और शरतचन्द्र गोश्वामी जी ने उनके इस महान कार्य में हाथ बताँया था। इस तरह कम समय में ही स्व. यमुना प्रसाद श्रीवास्तव के परिश्रम तथा संगठन के फलस्वरुप गुवाहाटी, नगांव, शिवसागर, डिब्रूगढ़, जोरहाट, सिलचर, गोलाघाट, उत्तरलखीमपुर और तेजपुर में हिन्दी प्रचार के शिक्षण वर्ग चलने लगे। फिर मंगलदै, बरपेटा, धुबड़ी, ग्वालपाड़ा, इम्फल, गणेशवरी, डिकम, दुमदुमा आदि स्थानो में हिन्दी शिक्षण वर्ग खोले गए थे। सभी महान और विद्वान हिन्दीप्रेमिओं के चेष्टा से सन् 1938 ई.में 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार